अध्याय - सात

रामेश्वर सिंह 'काश्यप'

रामेश्वर सिंह काश्यप के जन्म 16 अगस्त सन् 1927 ई० के सासाराम के नजदीक सेमरा (रोहतास) गाँव में भइल रहे। प्रवेशिका 1944 ई० में मुंगेर जिला स्कूल से पास कइलीं। आ पटना विश्वविद्यालय से 1950 ई० में एम० ए० कइलीं। पढ़ाई में तेज भइला के चलते आदि से अंत ले प्रथम श्रेणी प्राप्त कइलीं।

हिन्दी आ भोजपुरी दूनों में समान रूप से कविता, उपन्यास, कहानी, निबंध आ नाटक लिखत रहीं। इहाँ के एगो बाल उपन्यास 'स्वर्ण रेखा' छपल रहे। एकरा अलावा 'लोहा सिंह' रेडियो नाटक से इहाँ के राष्ट्रीय ख्याति मिलल। 'अपराजेय निराला,' 'समाधान', 'मामी से भेंट', 'उलट फेर', 'बेकारी का इलाज' आदि नाटक आ एकांकी के संग्रह छप के प्रशंसित हो चुकल बा। साहित्य सृजन खातिर भारत सरकार 'पद्मश्री' सम्मान देके इहाँ के सृजनशीलता के सम्मानित कइले बा। बिहार सरकार भोजपुरी अकादमी के अध्यक्ष पद पर चुनाव करके सम्मानित कइले रहे। जीवन-पर्यन्त इहाँ के हिन्दी-भोजपुरी साहित्य सृजन करत रहलीं। अक्टूबर, 1992 ई० में इहाँ के मृत्यु भइल।

विषय प्रवेश

रामेश्वर सिंह 'काश्यप' के 'भोर' कविता में प्रकृति के बड़ा मोहक आ मनोहारी चित्र उकेरल गइल बा। एह कविता में भिनसहरा के बाद सबेर के जतना हृदयग्राही चित्रण कइल गइल बा, ऊ अन्यत्र दुर्लभ बा। प्रकृति के मानवीकरण के जतना स्वाभाविक प्रयोग एह कविता में भइल बा, ऊ छायावादी कविता के इयादे नइखे दिया देत, बलुक ओहमें आपन महत्त्वपूर्ण स्थानो बना लेता। भोर के नायिका के रूप में समाप्त होखे वाला रात के बुढ़िया के रूप में, तरई, चमगादड़, उरूआ आदि के प्रतीक के रूप में बड़ा सुन्दर चित्र उपस्थित कइल गइल बा। सँउसे कविता में भोर चुलबुली नायिका लेखा आचरण करत चिरंइन के खोंता में, सुहागिन के शयन कक्ष में, मुर्गीखाना में आ अउरी जगह जाके सभका के जगावे के काम कर रहल बिया। एह कविता में अद्भुत बिम्ब योजना, अलंकार योजना, शब्द विन्यास आ सौंदर्य योजना के छटा बिखर रहल बा। ई कविता प्रकृति चित्रण सम्बन्धी मानवीकरण करेवाली कविता में काफी महत्त्वपूर्ण बिया।

भोर

(1)

गोरकी बिटियवा टिकुली लगा के
पुरुब किनारे तलैया नहा के
चितवन से अपना जादू चला के
ललकी चुनरिया के अँचरा उड़ा के
तनिका लजा, तब बिहँस, खिलखिला के

नूपुर बजावत किरिनियाँ के निकलल,
अपना अटारी के खोललस खिरिकिया
फैलल फजिर के अँजोर

(2)

करियक्की बुढ़िया के डँटलस धिरवलस
बुढ़िया सहम के मोटरी उठवलस
तारा के गहना समेटलस बेचारी
चिमगादुर, उरूआ, अन्हरिया के संगे
भागल ऊ खँडहर के ओर।

(3)

अस उतपाती ई चंचल बिटियवा
भारी कुलच्छन भइल ई धियवा
आफत के पुड़िया, बहेंगवा के टाटी
मारे सहक के हो गइल ई माटी
चिरइन के खोंता में जा के उड़वलस
सूतल मुरुगवन के कसके डेरवलस

कुकड़ूकूँ कइलन बेचारे चिहा के
पगहा तुड़वलन सुन के, डेरा के -

ललकी-गुलाबी बदरियन के बछरू
भगले असमनवाँ के ओर।

(4)

सूतल कमल के लागल जगावे
भँवरा के दल के रिझावे, बोलावे
चंपा चमेली के घूँघट हटावे
पतइन, फुनुगियन के झुलुआ झुलावे

तलैया के दरपन में निरखेले मुखड़ा
कि केतना बानी हम गोर

(5)

सीतल पवन के कस के लखेदलस
झाड़ी में, झुरमुट में, सगरो चहेटलस
सरसों बेचारी जवानी में मातल
डूबल सपनवा में रतिया के थाकल
ओकर पियरकी चुनरिया ऊ घिंचलस

बरजोरी लागल बहुत गुदगुदावे,
सरसों बेचारी के अँखिया से ढरकल
ओसवन के, मोती के लोर।

(6)

परबत के चोटी के सोना बनवलस
समुन्दर के हेल्फा पर गोटा चढ़वलस
बगियन-बगइचन में हल्ला मचवलस
गवँई, नगरिया के निंदिया नसवलस

किरिनियाँ के डोरा के बीनल अँचरवा,
फैले लागल चारों ओर।

(7)

छप्पर पर आइल, ओसारा में चमकल
चुपके से गोरी तब अँगना में उतरल
लागल खिरिकियन से हँस-हँस के झाँके
जहँवा ना ताके के ओहिजो ई ताके
कोहबर में सूतल बहुरिया चिहुँक के
लाजे इंगोरा भइल, फिर चुपके
अपना सजनवाँ से बहियाँ छोड़ा के
ससुआ-ननदिया के अँखिया बचा के

घइला कमरिया पर घर के ऊ भागल
जल्दी से पनघट के ओर।

ABDIEL SOLUTIONS

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भोर कविता में 'गोरकी बिटिया' केकर प्रतीक बा ?
2. करियक्की बुढ़िया से कवि के का तात्पर्य बा ?
3. करियक्की बुढ़िया के कवन धिरावता ?
4. 'अस उतपाती ई चंचल बिटियावां, के प्रयोग केकरा खातिर भइल बा ?
5. **'भोर' कविता के कवि बानीं'-**
   (क) अशान्त (ख) भोलानाथ गहमरी
   (ग) रामेश्वर सिंह 'काश्यप' (घ) पांडेय कपिल
6. **सरसो के आँख से कवना चीज लोर बनके ढ़रकता ?**
   (क) पानी (ख) मेघ (ग) बादल (घ) ओस
7. **खोंता से चिरई के के उड़ावेला आ सूतल मुरुगवन के के जगावेला ?**
   (क) भोर (ख) पनिहारिन (ग) ललकी बदरिया (घ) शीतल पवन

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भोर कविता कवना तरह के कविता बिया ?
2. भोर आवे के पहिले रात के भागे के चित्रण कवना पंक्तियन में भइल बा ?
3. कोहबर में सूतल बहुरिया काहे चिहुंक गइल ?
4. परबत के चोटी सोना कइसे हो जाला ?
5. गाँव-नगर के निंदिया नसावे के भाव का ह ?
6. छप्पर पर आके, ओसारा में चमक के अँगना में गोरी के उतरे के का अर्थ ह ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भोर कविता के भाव लिखीं।
2. सप्रसंग व्याख्या करीं।

क. करियक्की बुढ़िया के डंटलस धिरवलस
बुढ़िया सहम के मोटरी उठवलस
तारा के गहना समेटलस बेचारी
चिमगादुर उरूआ अन्हरिया के संगे
भागल ऊ खँडहर के ओर।

ख. परबत के चोटी के सोना बनवलस
समुन्दर के हल्फा पर गोटा चढ़वलस
बगियन-बगइचन में हल्ला मचइलस
गवँई नगरिया के निंदिया नसवलस
किरिनियाँ के डोरा के बीनल अँचरवा,
फैले लागल चारों ओर।

शब्द भंडार

गोरकी	–	गोर रंग के लड़की
बिटिया	–	बेटी
टिकुली	–	ललाट पर साटेवाली बिन्दिया
नहा के	–	नहइला के बाद
ललकी	–	लाल रंग के
चुनरिया	–	चुनरी
अँचरा	–	सारी के एगो भाग जे आगा रहेला, आँचर
तनिका	–	थोड़िका
किरनिया	–	किरिन
खोललस	–	खोल दिहलस
खिरकिया	–	खिड़की
फजिर	–	सबेरे भिनसहरा जब पह फाटेला
अँजोर	–	रोशनी, प्रकाश
करियक्की	–	करिया औरत
डँटलस	–	डाँट के बोलल
धिरवलस	–	धिरावल
उठवलस	–	उठावल
समेटलस	–	बटोर लिहल, इकट्ठा क लिहल
चिमगादुर	–	चमगादर, बादुर, एगो उड़े वाला स्तनधारी
उरुआ	–	उल्लू
अन्हरिया	–	अन्हार

ABSOL ABDIEL SOLUTIONS PATNA

भागल	–	भाग गइल
अस	–	अइसन
उतपाती	–	उपद्रव करे वाला, शरारती
कुलच्छन	–	खराब लक्षण
धियवा	–	लड़की, बेटी, धीया
आफत के पुड़िया	–	शरारती
बहेंगवा के टाटी	–	निरंकुश
सहक के	–	बहक के, शोखी से
माटी भइल	–	बरबाद भइल
चिरइन	–	चिड़िया सब
खोंता	–	चिड़ियन के घर, घोंसला
उड़वलस	–	उड़ावल
मुरुगवन	–	बहुत मुर्गा
डेरवलस	–	डेरावल
चेहा	–	अकचका के, चकित होके
पगहा	–	मवेशी के बान्हे वाला रस्सी
तुड़वलन	–	तोड़लन
बदरियन	–	बदरा के समूह
बछरू	–	बच्चा, बाछा
असमनवाँ	–	असमान
पतइन	–	पतई के बहुवचन
फुनुगियन	–	टहनी के अगिला भाग, फुलुँगी के बहुवचन
झुलुआ	–	झूले वाला एगो साधन, झूला
गोर	–	शरीर के एगो रंग, लात गोड़
लखेदलस	–	खदेरलस, भगइलस या चहेटलस
सगरो	–	सभतर, सब जगहा
चहेटलस	–	पीछा कइलस
पियरकी	–	पीला रंग के वस्तु

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL

घिंचलस	–	खींचलस
बरजोरी	–	जबरदस्ती
ढरकल	–	गिरल
ओसवन	–	ओस के बहुवचन, सीत
लोर	–	आंसू
हल्फा	–	लहर
बगियन-बगइचा	–	बाग-बगीचा
गँवई	–	छोट गाँव
नसवलस	–	नास कइलस
बीनल	–	बुनल
ओसारा	–	बरामदा,
ताके	–	देखे
ओहिजो	–	उँहवा
कोहबर	–	दुल्हा-दुल्हिन के सूतेवाला घर
इंगोरा	–	आग के टुकरा, अँगारा
घइला	–	घड़ा
कमरिया	–	कमर